वर्तमान भारत के सन्दर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन

Chandana Banerjee[1]*, Dr. Mamta Rani[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University

[2] Professor, Hindi Department, Kalinga University

सार *- पं. दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने अपने विभिन्न योगदानों के माध्यम से भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक उनकी शैक्षिक विचारधारा थी, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह भारतीय समाज को बदल सकती है और इसकी वास्तविक क्षमता को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। दीनदयाल उपाध्याय की शैक्षिक विचारधारा और वर्तमान भारतीय परिवेश में इसकी प्रासंगिकता। अध्ययन उपाध्याय के जीवन और योगदान के अवलोकन के साथ शुरू होता है, उसके बाद उनके शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण होता है, जिसमें व्यक्ति के समग्र विकास, सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने और आधुनिक और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण पर जोर दिया जाता है। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली चुनौतियाँ, जैसे डिजिटल डिवाइड, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच की कमी और व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता। अध्ययन का तर्क है कि उपाध्याय का शैक्षिक दर्शन मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देकर इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है, जो व्यक्ति के समग्र विकास को प्राथमिकता देता है और उन्हें आधुनिक दुनिया में फलने-फूलने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करता है।*

कीवर्ड *- भारत, पंडित दीनदयाल उपाध्यायए शैक्षिक विचारधारा*

---------------------------------X---------------------------------

1. परिचय

दीनदयाल उपाध्याय (25 सितंबर 1916 - 11 फरवरी 1968) एक भारतीय राजनेता, एकात्म मानवतावादी विचारधारा के समर्थक और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के अग्रदूत राजनीतिक दल भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के नेता थे। उपाध्याय ने हिंदुत्व पुनरुत्थान के आदर्शों को फैलाने के लिए 1940 के दशक में मासिक प्रकाशन राष्ट्र धर्म की शुरुआत की, जिसका व्यापक अर्थ 'राष्ट्रीय कर्तव्य' है। उपाध्याय को जनसंघ के आधिकारिक राजनीतिक सिद्धांत, कुछ सांस्कृतिक-राष्ट्रवाद मूल्यों को शामिल करके एकात्म मानववाद और सर्वोदय (सभी की प्रगति) और स्वदेशी (आत्मनिर्भरता) जैसे कई गांधीवादी समाजवादी सिद्धांतों के साथ उनके समझौते का मसौदा तैयार करने के लिए जाना जाता है।

अन्य आवेदकों के विपरीत, वह अपनी चाची के आग्रह पर धोती और कुर्ता और सिर पर टोपी के साथ सरकार द्वारा प्रायोजित परीक्षा में बैठे। आशावान लोगों ने मजाक में उन्हें "पंडितजी" के रूप में संदर्भित किया, एक ऐसा नाम जिसे लाखों लोग सराहेंगे और पसंद करेंगे। एक बार फिर, उन्होंने परीक्षा में उच्चतम स्कोर किया और अंत में उन्हें चुना गया। उनके चाचा ने उन्हें बी.टी. करने के लिए हरी झंडी दे दी थी, इसलिए वे उखड़ गए और प्रयाग की ओर चल पड़े। प्रयाग से अपने आरएसएस के प्रयासों को बनाए रखते हुए। अपना बीटी पूरा करने के बाद, उन्होंने अपना जीवन आरएसएस को समर्पित कर दिया, यूपी के लखीमपुर जिले में एक आयोजक बन गए और अंततः 1955 में यूपी में आरएसएस के प्रांतीय आयोजक के पद पर आसीन हुए। (सिंह अरमजीत 2015)

www.ignited.in

अपने प्रिय मूल्यों का प्रसार करने के लिए, उन्होंने लखनऊ में राष्ट्र धर्म प्रकाशन प्रकाशन व्यवसाय और राष्ट्र धर्म पत्रिका की स्थापना की। उसके बाद उन्होंने साप्ताहिक 'पांचजन्य' और दैनिक 'स्वदेश' प्रारंभ किया। नेहरू-लियाकत गठबंधन को खारिज करने के बाद उस समय के एक मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1950 में विपक्ष में शामिल होने और लोकतांत्रिक ताकतों के एकल मोर्चे के लिए काम करने के लिए अपना कार्यालय छोड़ दिया। डॉ. मुखर्जी ने श्री से संपर्क किया। राजनीतिक मोर्चे पर मुद्दे को उठाने के लिए भावुक युवाओं को एकजुट करने में गुरुजी का प्रभाव।

21 सितंबर, 1951 को पंडित दीनदयालजी ने यूपी के राजनीतिक नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया और राज्य में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। पहला अखिल भारतीय अधिवेशन 21 अक्टूबर, 1951 को आयोजित किया गया था, जिसमें पंडित दीनदयाल जी प्रेरक थे और डॉ. मुखर्जी पीठासीन अधिकारी थे।

पंडित दीनदयाल जी में अद्वितीय सांगठनिक क्षमता है। 1968 में, पार्टी के इस विनम्र नेता को राष्ट्रपति के पद पर पदोन्नत किया गया, जो जनसंघ के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण था। दीनदयालजी ने इस भारी बोझ को उठाने के बाद जनसंघ के संदेश को फैलाने के लिए दक्षिण की यात्रा की। कालीकट अधिवेशन में हजारों प्रतिनिधियों के लिए उनके रैलिंग भाषण का एक अंश निम्नलिखित है। (अग्रवाल शिवाली 2017)

1.1 प्रारंभिक जीवन

उनका जन्म 25 सितंबर, 1916 को भारत के उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में स्थित नगला चंद्रबन की बस्ती में हुआ था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे। उनकी माता, रामप्यारी उपाध्याय, एक गृहिणी थीं और उनके पिता, भगवती प्रसाद उपाध्याय, एक स्कूल शिक्षक थे। उनके माता-पिता दोनों भारत से थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रारंभिक शिक्षा उनके गृह नगर पिलानी, राजस्थान में हुई। बाद में, जब वे राजस्थान के पिलानी गए, तो उन्होंने अपने माध्यमिक विद्यालय के लिए बिड़ला हाई स्कूल में पढ़ाई की। उसके बाद, उन्होंने कानपुर में आगे की पढ़ाई की, अंततः 1939 में कानपुर विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) में शामिल हो गए, जो भारत में एक राष्ट्रवादी संगठन है जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को बढ़ावा देता है, जब उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर ली थी और कार्यबल में प्रवेश करने के लिए तैयार थे। वे आरएसएस के दर्शन से गहराई से प्रभावित हुए, जिसके कारण वे पूर्णकालिक आधार पर संगठन के कर्मचारी बन गए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के आरोप में हिरासत में ले लिया गया था। यह एक विशाल सविनय अवज्ञा अभियान था जिसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने भारत में ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ किया था। सलाखों के पीछे अपने समय के दौरान (जो चार साल तक चला), उन्होंने अपनी शिक्षा को बनाए रखा और अपनी दार्शनिक अवधारणाओं को विकसित करने पर काम किया।

1.2 पारिवारिक जीवन

दीनदयाल जी के परिवार की गतिशीलता दुखद थी। एक छोटे बच्चे के रूप में भी, मैं मौत के संपर्क में था। वह वास्तव में कभी घर पर नहीं रहता था। उनका पालन-पोषण उनके अपने परिवार के अलावा उनके नाना चुन्नीलाल ने धरनाकिया में किया। लगभग उसी समय, जब वे मात्र ढाई वर्ष के थे, उनके पिता का देहांत हो गया। जैसे ही दीनदयाल जी के पिता का निधन हुआ, रामप्यारी विधवा हो गईं। रामप्यारी, एक युवा विधवा, जिसने अभी-अभी अपने पति को खोया था, बीमार हो गई और अपने छोटे बेटे दीनदयाल जी को पीछे छोड़कर राम के करीब आ गई। माता-पिता के प्यार और देखभाल के बिना, दीनदयाल एक सच्चे 'दीना' (अनाथ) बन गए। दादाजी चुन्नीलाल, जो पहले से ही ईश्वर के बहुत निकट थे, ने अब दीनदयाल जी का सिर पकड़ लिया। मां के गुजर जाने के ठीक दो साल बाद, बुजुर्ग, स्नेही पिता, जो अपनी बेटी के भरोसे की देखभाल कर रहे थे, आखिरकार चल बसे। इसके अलावा, नाना चुन्नीलाल ने इसे बाद के जीवन में बनाया। अपने पिता, माता या दादा के स्नेह के बिना, उन्होंने अपने मामा राधारमण शुक्ल की चैकस निगाहों के तहत अपने प्रारंभिक वर्षों की शुरुआत की, जहाँ उन्होंने शारीरिक और बौद्धिक रूप से विकास करना जारी रखा। दीनदयालजी जब पंद्रह वर्ष के थे, तब उनके मामा का निधन हो गया था, और यह ऐसा था जैसे भगवान ने उनके माता-पिता का पालन-पोषण कर दिया

www.ignited.in

हो। पंद्रह वर्षों तक, उन्होंने अपने माता-पिता के गुजर जाने पर विचार किया था।

समय ने उन्हें अपने छोटे भाई का रक्षक भी बना दिया, जिसे वे अपनी कम उम्र के बावजूद "शिबू" कहते थे। उनके निर्माता द्वारा लगाए गए परीक्षणों के लिए एक दूसरे के लिए उनका प्यार अधिक सूक्ष्म और दैवीय रूप से प्रेरित था। शायद मौत ने सर्वगत दीनदयाल जी से आमने-सामने मिलने की ठान ली थी। अठारह वर्ष की आयु में, दीनदयाल जी को नौवीं कक्षा में नामांकित किया गया था जब उनके छोटे भाई शिबू को 'टाइफाइड' हो गया था। दीनदयाल जी की लाख कोशिशों के बावजूद वे शिबू को नहीं बचा पाए। शिवदयाल के बड़े भाई दीनदयाल को उनके छोटे भाई ने छोड़ दिया था। (मिश्रा कौशल किशोर 2017)

2. पं. दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को एक प्रतिष्ठित राष्ट्रवादी राजनीतिक विचारक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और भारतीय संस्कृति और परंपराओं में विश्वास रखने वाले के रूप में जाना जाता है। उनके लिए, गरीबों का उत्थान, उत्पादन और आर्थिक गतिविधियों में स्थानीय भागीदारी, जन जागरूकता और जागृति प्राथमिक सरोकार थे। सनातन 'परंपराओं में विश्वास रखने वाले, उन्होंने अपना जीवन जनता की भलाई के लिए समर्पित कर दिया।

जिंदगी:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय (उपनाम दीना) का जन्म 25 सितंबर, 1916 को मथुरा जिले के फराह शहर के पास नगला चंद्रबन गांव में हुआ था, जिसे अब दीनदयाल धाम कहा जाता है। उनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे और उनकी माता रामप्यारी उपाध्याय एक समर्पित महिला थीं। उनकी कुंडली का अध्ययन करने वाले एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि वह शादी नहीं करेंगे बल्कि एक महान विद्वान, विचारक, निस्वार्थ कार्यकर्ता और राजनेता बनेंगे जो भारत की सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करेंगे।

दुर्भाग्य से, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के माता-पिता की मृत्यु उनकी युवावस्था में ही हो गई थीय कुछ साल बाद उनके नाना जिनके साथ वे रहे उनकी भी मृत्यु हो गई। और 1934 में उनके भाई शिवदयाल उन्हें अकेला छोड़कर चल बसे। उन्होंने सीकर के हाई स्कूल में पढ़ाई की और बोर्ड की परीक्षा में प्रथम स्थान पर रहे। सीकर के महाराजा कल्याण सिंह ने उन्हें स्वर्ण पदक देकर सम्मानित कियाय किताबें खरीदने के लिए 250 रुपये और 10 रुपये की मासिक छात्रवृत्ति। उन्होंने अपना इंटरमीडिएट जीडी बिड़ला कॉलेज, पिलानी (वर्तमान में बिट्स, पिलानी), राजस्थान से किया। यहां 1935 में घनश्याम दास बिड़ला ने उन्हें स्वर्ण पदक और छात्रवृत्ति देकर सम्मानित किया। उन्होंने सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर से प्रथम श्रेणी में अंग्रेजी साहित्य में बीए की डिग्री हासिल की। 1939 में वे आगरा चले गए और अंग्रेजी साहित्य में एमए करने के लिए आगरा के सेंट जॉन कॉलेज में दाखिला लिया। प्रथम श्रेणी के बावजूद, वे अपनी मौसेरी बहन रमादेवी की बीमारी और आर्थिक सहायता की कमी के कारण अंतिम वर्ष की परीक्षा में शामिल नहीं हो सके। (शर्मा डॉ० महेश चंद्र 2016)

उनकी दृष्टिः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को पुरुष सर्वोच्च माना जाता है। उनके अनुसार, "मनुष्य, ईश्वर की सर्वोच्च रचना, अपनी स्वयं की पहचान खो रहा है। हमें उसे पुनः उसकी उचित स्थिति में स्थापित करना चाहिए, उसे उसकी महानता का बोध कराना चाहिए, उसकी योग्यताओं को पुनः जगाना चाहिए और उसे उसके प्रसुप्त व्यक्तित्व की दिव्य ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। यह विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था से ही संभव है। स्वदेशी और विकेन्द्रीकरण दो शब्द हैं जो वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल आर्थिक नीति को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं।" उनके लिए, एक स्वतंत्र राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता था यदि वह व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, आदि जैसी पश्चिमी अवधारणाओं पर निर्भर करता था। साथ ही, उन्होंने आधुनिक तकनीक और पश्चिमी विज्ञान की सराहना की, लेकिन एक मिश्रित रूप को अपनाना चाहते थे जो सबसे उपयुक्त हो। भारतीयों। उनका विचार था कि पश्चिमी विज्ञान भारतीयों को आगे बढ़ने में मदद कर सकता है लेकिन जीवन के पश्चिमी तरीके और मूल्य प्रणाली की विचारहीन नकल हमारी समृद्ध परंपराओं और प्राचीन संस्कृति में निहित सामाजिक-आर्थिक और नैतिक मूल्य प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकती है। उनका मुख्य जोर राष्ट्रवाद और मूल्य आधारित राजनीति था।

3. उपाध्याय जी का साहित्यिक परिचय

25 सितंबर, 1916 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म मथुरा जिले के बृज के पवित्र स्थल नगला चंद्रबन गांव में हुआ था। उनका दिया हुआ नाम दीनदयाल उपाध्याय था, लेकिन उनके चाहने वाले उन्हें "दीना" के

www.ignited.in

नाम से जानते थे। उनकी पूज्य माता का नाम श्रीमती रामप्यारी था, जबकि उनके पिता, श्री भगवती प्रसाद, जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर के रूप में कार्यरत थे। उनके परदादा प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित हरिराम उपाध्याय थे। जिस ज्योतिषी ने उसकी जन्म कुंडली की जांच की थी, उसके अनुसार बच्चा बड़ा होकर एक उज्ज्वल विद्वान और विचारक, एक समर्पित कार्यकर्ता और एक प्रमुख राजनीतिज्ञ होगा, लेकिन वह कभी शादी नहीं करेगा। बड़े भाई के जन्म के दो वर्ष बाद श्रीमती रामप्यारी के दूसरे पुत्र शिवदयाल हुए। श्री भगवती प्रसाद, उनके पिता का निधन तब हुआ जब वे केवल तीन वर्ष के थे, और उनकी माता का निधन तब हुआ जब वे केवल आठ वर्ष के थे। (नेने विनायक वासुदेव 2017)

उनकी माता, श्रीमती रामप्यारी की मृत्यु के दो साल बाद, उनके पिता श्री चुन्नीलाल, जो अपने दो बेटों को आगरा जिले के फतेहपुर सीकरी के पास अपने गाँव गुड़ की मंधाई में अपनी मृत बेटी की विरासत के रूप में ला रहे थे, का भी सितंबर 1926 में निधन हो गया दीनदयाल जी उस समय दसवें वर्ष में थे। इस प्रकार वह अपने माता-पिता और अपने नाना दोनों के प्यार और स्नेह से वंचित था। वह अपने मामा के यहां रहने लगा। दीनदयाल की बुआ अपने दोनों भाइयों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील थींय उसने उन्हें अपने बच्चों की तरह पाला। वह अनाथ बच्चों की सरोगेट मदर बनीं। छोटी उम्र में ही दस वर्षीय दीनदयालजी अपने छोटे भाई के अभिभावक बन गएय उसने उसकी देखभाल की और उसकी सभी जरूरतों का ख्याल रखा। जब वे नौवीं कक्षा में थे और अठारहवें वर्ष में, उनके छोटे भाई शिवदयाल को चेचक हो गया। दीनदयालजी ने उस समय उपलब्ध सभी प्रकार के उपचार प्रदान करके शिवदयाल की जान बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन 18 नवंबर, 1934 को शिवदयाल की भी मृत्यु हो गई। दीनदयालजी इस तरह इस दुनिया में अकेले रह गए। (केलकर भालचन्द्र कृष्णा जी 2018)

4. मूल अवधारणा

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता थे जिन्होंने एकात्म मानववाद के राजनीतिक दर्शन की स्थापना की। एकात्म मानववाद की मूल अवधारणा भौतिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आयामों सहित मानव जीवन के सभी पहलुओं का सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत विकास है। एकात्म मानववाद विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता के महत्व पर जोर देता है और एक ऐसे समाज की वकालत करता है जो सहयोग, आपसी सम्मान और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो। पं। के अनुसार। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, एकात्म मानववाद का लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो शोषण से मुक्त हो, जहां प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने और सामान्य भलाई में योगदान करने का अवसर मिले। (कुलकर्णी शरद अनन्त 2018)

पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के दर्शन का भारतीय राजनीतिक चिंतन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, और उनके विचार आज भी भारत में राजनीतिक विमर्श को आकार दे रहे हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय (1916-1968) एक भारतीय दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता थे जिन्होंने एकात्म मानववाद के राजनीतिक दर्शन की स्थापना की। वह भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे और एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य थे।

5. समाज में भूमिका

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय समाज और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह एक दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता थे जिन्होंने एकात्म मानववाद के राजनीतिक दर्शन की स्थापना की, जो मानव जीवन के सभी पहलुओं के सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत विकास पर जोर देता है। (भिषीकर चन्द्रशेखर परमानन्द 2020)

एकात्म मानववाद के उनके दर्शन ने मानव विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रस्ताव दिया, जिसने एक ऐसे समाज का निर्माण करने की मांग की जो शोषण से मुक्त हो और सहयोग, आपसी सम्मान और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो। वह “अंत्योदय“ की अवधारणा में विश्वास करते थे, जिसका अर्थ है समाज में अंतिम व्यक्ति का उत्थान, और विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता के महत्व पर जोर दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के एक सदस्य के रूप में, एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन, पं। दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में महत्वपूर्ण

www.ignited.in

भूमिका निभाई। उन्होंने जनसंघ, एक राजनीतिक दल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में विकसित हुई। (देवधर विश्वनाथ नारायण 2019)

पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन आज भी भारतीय राजनीति और समाज को प्रभावित करते हैं। उनकी विरासत को दीनदयाल अनुसंधान संस्थान सहित भारत में विभिन्न संगठनों और संस्थानों द्वारा मनाया जाता है, जिसे उनकी स्मृति में स्थापित किया गया था। एक दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता के रूप में भारतीय समाज में उनके योगदान को भारत और दुनिया भर के लोगों द्वारा याद किया जाता है और उनका अध्ययन किया जाता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक दार्शनिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेता के रूप में भारतीय समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां उनके कुछ प्रमुख योगदान हैं

i. एकात्म मानववाद का दर्शन

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के दर्शन की स्थापना की, जो मानव जीवन के सभी पहलुओं के समग्र विकास पर जोर देता है। यह दर्शन एक ऐसे समाज की वकालत करता है जो सहयोग, आपसी सम्मान और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो।

एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ एक घेरा -समाज, जाति, फिर राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रह्माण्ड को अपने में समाविष्ट किये है।

ii. अंत्योदय

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने “अंत्योदय“ शब्द गढ़ा, जिसका अर्थ है समाज में अंतिम व्यक्ति का उत्थान। वह समाज के सबसे कमजोर और सबसे कमजोर सदस्यों को सशक्त बनाने के सिद्धांत में विश्वास करते थे, ताकि वे भी सम्मान और सम्मान के साथ जी सकें। (मोडक प्रो. अशोक 2017)

दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। मेक इन इंडिया, कार्यक्रम के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक तथा आर्थिक बेहतरी के लिए कौशल विकास आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय (एच.यू.पी.ए.) के तहत शुरू किया गया था। भारत सरकार ने इस योजना के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

iii. जनसंघः

पं. दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के सह-संस्थापक थे, जो एक राजनीतिक दल था जिसकी स्थापना 1951 में हुई थी। जनसंघ बाद में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में विकसित हुआ, जो आज भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों में से एक है।

iv. आर्थिक विचार

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक अर्थशास्त्री थे जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकेंद्रीकरण की वकालत की थी। उनका मानना था कि लोगों के बीच आर्थिक शक्ति का वितरण किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने समुदायों के विकास में भाग ले सकें।

पण्डित दीन दयाल उपाध्याय एक महान दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, उच्च कोटि के चिन्तक, विचारक और लेखक थे। इस रूप में उन्होंने श्रेष्ठ और संतुलित रूप में विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी। इन दिनों पण्डित दीनदयाल उपाध्याय पर निरन्तर चर्चा हो रही है। आर्थिक विकास को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग विचार प्रतिपादित किए है। प्रत्येक विचारधारा राष्ट्रीय आर्थिक उन्नति के मूल में खुद को प्रस्तुत करती है।

v. सामाजिक और शैक्षिक सुधार

पं. दीनदयाल उपाध्याय सामाजिक और शैक्षिक सुधारों के प्रबल पक्षधर थे। वह महिलाओं के सशक्तिकरण, अस्पृश्यता के उन्मूलन और सभी के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने में विश्वास करते थे।

दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय राजनेता, दार्शनिक और समाज सुधारक थे जिन्होंने देश की सामाजिक और शैक्षिक नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह एकात्म मानववाद की अवधारणा के प्रबल पक्षधर थे, जो मानव जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के संयोजन के महत्व पर बल देता है।

6. उपाध्याय जी का योगदान

www.ignited.in

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कार्यों के परिणामस्वरूप भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में गहरा बदलाव आया। उनके विचार गहन और सर्वव्यापी थे, और उन्होंने विभिन्न तरीकों से दुनिया पर एक चिरस्थायी छाप छोड़ी है। (डॉ० विश्वामित्र पाण्डेय 2018)

उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय राजनीतिक चिंतन में था। उन्होंने भारत की संघीय प्रणाली में सुधार के लिए अथक प्रयास किया और भारत में एक मजबूत और कुशल राजनीतिक व्यवस्था के लिए संघर्ष किया ताकि वे अपने देश के लोगों को बेहतर सेवा प्रदान कर सकें।

उन्होंने समाज में सभी के साथ समान व्यवहार करने की वकालत की। उन्होंने सामाजिक सुधार और समानता की वकालत करने वाले कई आंदोलनों में एक नेता के रूप में कार्य किया।

साथ ही, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जब स्कूल पहली बार बनाया गया था, तो उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि ऐसा नाम चुनना कितना महत्वपूर्ण है जो समुदाय के लिए किसी प्रकार का महत्व रखता हो। (सिंह शरद 2016)

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वयं बहुत बड़े पत्रकार और संचारक थे। अपनी विचारधारा को पुष्ट करने के लिए पत्रों का संपादन, प्रकाशन, स्तंभ लेखन, पुस्तक लेखन उनकी रुचि का विषय था। उन्होंने लिखने के साथ-साथ बोलकर भी एक प्रभावी संचारक की भूमिका का निर्वहन किया है। उनकी स्मृति को रेखांकित करते हुए क्या हम विचार कर सकते हैं कि समाज जीवन के हर पक्ष में एकात्म मानवदर्शन किस तरह प्रभावी हो सकता है। भरोसा करना कठिन है कि श्री दीनदयाल उपाध्याय जैसे साधारण कद-काठी और सामान्य से दिखने वाले मनुष्य ने भारतीय राजनीति और समाज को एक ऐसा वैकल्पिक विचार और दर्शन प्रदान किया कि जिससे प्रेरणा लेकर हजारों युवाओं की एक ऐसी मालिका तैयार हुयी, जिसने इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भारतीय राजसत्ता में अपनी गहरी पैठ बना ली।

7. प्रतिभाशाली छात्र जीवन

दीनदयाल की शिक्षा अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण नौ वर्ष की आयु तक विलंबित रही। 1925 में जब वे अपने मामा राधारमण के घर पहुंचे, तो उन्होंने अपनी औपचारिक शिक्षा शुरू की। कोई अन्य कॉलेज-आयु वर्ग के बच्चे मौजूद नहीं थे। यह सिर्फ सीखने के लिए अच्छा माहौल नहीं था। कई त्रासदियों ने घर में हमेशा तनावपूर्ण माहौल में योगदान दिया। घरेलू सुख-सुविधा उपलब्ध नहीं थी। जब दीनदयाल के चाचा अस्वस्थ हुए, तब वे दूसरी कक्षा में थे। दीनदयाल ठीक होने के दौरान आगरा के अस्पताल में अपने चाचा से मिलने गए। फाइनल तक कुछ ही दिन बचे थे, वह स्वदेश लौटने में सक्षम थे। उन्होंने परीक्षाओं में भाग लिया और कक्षा में टॉप किया। अपने बीमार चाचा की देखभाल करते हुए, उन्होंने ग्रेड 3 और 4 पूरा किया। कठिनाइयों के बावजूद, उनके परिवार ने अंततः उनकी शैक्षणिक कौशल को स्वीकार किया।

कोटा में कक्षा पांच, छह और सात की पढ़ाई पूरी करने के बाद राजगढ़ में आठवीं कक्षा में दाखिला लिया। लगभग इसी समय, उन्होंने अपनी अद्भुत गणितीय क्षमता के बारे में जाना। उनके बारे में कहा जाता है कि दसवीं कक्षा के बच्चे उनके पास गणित पढ़ने आते थे, जबकि वे केवल नौवीं में थे। उनके चाचा को वहां स्थानांतरित कर दिया गया था, इसलिए उन्हें अगले वर्ष सीकर शहर का दौरा करना पड़ा। उन्होंने सीकर के कल्याण हाई में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की। उसने न केवल कक्षा में, बल्कि पूरे बोर्ड परीक्षा में टॉप किया। सीकर के पूर्व राजा कल्याण सिंह ने उन्हें उनकी शिक्षा और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए एक स्वर्ण पदक और 10 भारतीय रुपए (लगभग $2) का मासिक वजीफा दिया। उस समय उन्हें करीब 250 रुपये की छात्रवृत्ति मिली थी। (डॉ० चन्द्र प्रकाश सिंह 2017) इससे पहले, पिलानी शैक्षणिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र था। 1935 में, दीनदयाल ने पिलानी इंटरमीडिएट स्कूल में पढ़ाई की। 1937 में, उन्होंने अपनी इंटरमीडिएट की परीक्षा दी और पूरे बोर्ड में एक सही अंक अर्जित किया। उन्होंने बिरला कॉलेज में एक पूर्ण ग्रेड प्राप्त करने वाले पहले छात्र होने का गौरव प्राप्त किया। घनश्याम दास बिड़ला ने उन्हें सीकर के महाराजा की तरह एक स्वर्ण पदक, 10 रुपये मासिक छात्रवृत्ति, और किताबों के लिए पैसा आदि दिया। उनका बी.ए. परीक्षा अच्छी गई। 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज में शीर्ष अंकों के साथ परीक्षा। उन्होंने आगरा के सेंट जोन्स कॉलेज में मास्टर ऑफ आर्ट्स प्रोग्राम में दाखिला लिया। मीडिया अंग्रेजी में। उनकी बहन की स्थिति ने उन्हें अपने कॉलेज के दूसरे वर्ष में परीक्षा में बैठने से रोक दिया, बावजूद इसके कि उन्होंने अपने पहले वर्ष में प्रथम श्रेणी में प्रवेश किया था। उन्होंने अपने चाचा के आग्रह पर आवश्यक प्रशासनिक परीक्षाएँ लीं और उन्हें पास कर लिया। भले ही उन्हें साक्षात्कार के बाद चुना गया था, लेकिन प्रशासन में काम करने की उनकी कोई

www.ignited.in

इच्छा नहीं थी और इसके बजाय उन्होंने बी.टी. पूरा करने के लिए प्रयाग की यात्रा की। (डॉ० राकेश दुबे 2016)ः

8. निष्कर्ष

राष्ट्र की भावी दिशा निश्चित करने की दृष्टि से पं. दीनदयाल उपाध्याय ने उपरोक्त दोनो विचार धाराओं की विवेचना करना उचित समझा। विवेचना के उपरान्त उन्होनें पाया कि लौटकर पुनः वहीं से चलना प्रारम्भ करना जहाँ हम रूक गये थे, उचित नही होगा। क्योंकि राष्ट्र न तो कोई निर्जीव वस्तु है न कोई पुस्तक जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ छोड़ दिया गया वहीं से दुबारा बुनना या पढ़ना प्रारम्भ कर दें। फिर परतन्त्रता के काल खण्ड में भी हम चुप नही बैठे, कुछ न कुछ करते ही रहे है। स्वतन्त्रता के लिए किया गया सफल प्रयास एवं हमारे कर्तब्य का ज्वलंत उदाहरण है, इसलिए लौटकर चलना बुद्धिमानी नही होगी। परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का हमारा प्रयत्न भुलाकर चलना श्रेयष्कर नहीं होगा। इसी प्रकार दूसरी विचार धारा के अनुसार जो लोग विदेशी विचारों एवं प्रगति के आधार बनाकर चलना चाहते हैं वह भी भूल कर रहे हैं क्योंकि विदेशी विचार हमारे देश के लिए पूरी तरह उपयुक्त नही हो सकते। किसी भी देश की पहिचान उसकी अपनी संस्कृति से होती है। पश्चिमी देशों की विचार पद्धतियों में वहाँ की प्रकृति और संस्कृति की छाप है। उनको भारत में लागू करना न तो वैज्ञानिक ही है न विवेकपूर्ण। पश्चिमी विचारधारा तो संघर्ष पर आधारित है, वहाँ राष्ट्रीयता, प्रजातन्त्र, समता या समाजवाद को आदर्शों के रूप में स्वीकार किया गया है। उक्त आदर्श ब्यवहार में अपूर्ण एकांगी विभिन्न समस्याओं को एवं संघर्षो को जन्म देने वाले हैं।

9. संदर्भ

1. सिंह अरमजीत (2015) एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय, ई०य प्रभात पेपर बैक्स, 4 ध् 19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002 भारत ।
2. मिश्रा कौशल किशोर एवं अग्रवाल शिवाली (2017) पंण् दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शनय अनु बुक्स एच.ओ. 218 ध् 2. शिवाजी रोड, मेरठ, उ०प्र०, भारत ।
3. शर्मा डॉ० महेश चंद्र (2016) दीनदयाल उपाध्याय (कर्तृत्व एवं विचार)य प्रभात पपेर बैक्स, 4 ध् 19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 भारत।
4. नेने विनायक वासुदेव (2017) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार - दर्शन (खण्ड-2) एकात्म मानव दर्शन, तृतीयय सुरूचि प्रकाशन: केवश कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली - 110055।
5. केलकर भालचन्द्र कृष्णा जी (2018) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार - दर्शन (खण्ड-3) राजनीतिक चिन्तनय तृतीयय सुरूचि प्रकाशन: केवश कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली- 110055 भारत।
6. कुलकर्णी शरद अनन्त (2018) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार - दर्शन (खण्ड-4) एकात्म अर्थनीतिय तृतीयय सुरूचि प्रकाशन: केवश कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली- 110055।
7. भिषीकर चन्द्रशेखर परमानन्द (2020) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार - दर्शन (खण्ड-5) राष्ट्र की अवधारणाय तृतीयय सुरूचि प्रकाशन: केवश कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली - 110055।
8. देवधर विश्वनाथ नारायण (2019) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार - दर्शन (खण्ड-1) तृतीयय सुरूचि प्रकाशन: केवश कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली- 110055 भारत।
9. मोडक प्रो. अशोक (2017)ःपंडित दीनदयाल उपाध्याय: प्रजातंत्र और ग्रामीण भारतय द्वितीयय ज्ञान भारती प्रकाशन 27 ध् 65 जगतगंज, वाराणसी - 221002।
10. डॉ० विश्वामित्र पाण्डेय (2018) महात्मा गाँधी, डॉ० राम मनोहर लोहिया और पं. दीनदयाल उपाध्याय के समाजवादी विचार: निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
11. सिंह शरद (2016) दीनदयाल उपाध्याय: सं. 2016 ईण् सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. डॉ० चन्द्र प्रकाश सिंह (2017) एकात्म मानववाद विभिन्न आयाम, पहला, अरूधती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ, इलाहाबाद।
13. डॉ० राकेश दुबे (2016) एकात्म मानववादी शिक्षा दर्शन पहला विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरूक्षेत्र ।

Corresponding Author

Chandana Banerjee*

Research Scholar, Kalinga University

www.ignited.in